International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 132-136

वेद व्याख्यान परम्परा

रेखा कुमारी

संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत ।

प्रस्तावना

वेदभाष्य-परम्परा

सातवीं सदी ईसा पूर्व में यास्काचार्य का वेदव्याख्या के क्षेत्र में एक नया उदय माना जाना चाहिए जिन्होंने व्याख्या की सुदृढ़ नींव निरुक्त के माध्यम से स्थापित की थी। यद्यपि उन्होंने किसी वेद का या वेद के किसी एक खण्ड का भी आनुपूर्वी से भाष्य नहीं किया है तथापि वेदार्थ प्रक्रिया पर अधिक सांगोपांग और सटीक अध्ययन उन्होंने प्रस्तुत किया है। यास्क के पूर्व के भी अनेक महर्षियों ने इस क्षेत्र में योगदान दिया है जैसे- आग्रायण, औपमन्यव, औदुम्बरायण, और्णभाव, कात्थक्य, क्रौष्टुकि, गार्ग्य और गालवादि तथा इन आचार्यों के मतों को यास्काचार्य ने निरुक्त में उद्धृत किया है। यास्क के परवर्ती काल में देश में कई उथल-पुथल हुई तथा इसका प्रभाव वेदाध्ययन पर भी पड़ा । यही कारण हुआ होगा कि 1300 वर्षों तक व्याख्या की भूमिका बंजर पड़ी हुई थी।

समग्र रूप से वेदभाष्य की परम्परा मध्य-काल में प्रारम्भ हुई जिसमें सायण से पूर्ववर्त्ती वेदभाष्यकारों में स्कन्दस्वामी, उद्गीथ, नारायण, माधवभट्ट, वेंकटमाधव, उवट और आनन्दतीर्थ आदि है। पाश्चात्त्य विद्वानों में विल्सन, मैक्समूलर, रॉथ, लुडविग, ग्रिफिथ, मैक्डोनल आदि का प्रयास भी स्मरणीय है। आधुनिक भारतीय विद्वानों में महर्षि दयानन्द, योगिराज अरविन्द, मधुसूदन ओझा, सातवलेकर और कपाली शास्त्री आदि नाम वेद भाष्यकारों के रूप में लिए जाते है। इस प्रकार वैदिक भाष्यकारों ने अपनी क्षमता, योग्यता एवं रूचि के अनुसार वेद भाष्य करना प्रारम्भ किया जिसके फलस्वरूप भाष्य परम्परा विकसित होती चली गई और उसका क्रमिक विकास निम्न प्रकार से है-

1. स्कन्दस्वामी (638 ई.) –

वैदिक भाष्यकारों की गणना में स्कन्दस्वामी को सबसे प्राचीन माना जाता है क्योंकि इनके परवर्ती ग्रन्थों में इनका नाम अति आदरपूर्वक लिया गया है। इनके पिता का नाम भर्तृध्रुव था। ये गुजरात के वलभी नगर के निवासी थे। इनका भाष्य ऋग्वेद के अर्धभाग (चतुर्थ अष्टक) तक ही मिलता है। यास्क द्वारा प्रणीत निरुक्त पर भी इनकी टीका उपलब्ध होती है।

शतपथ ब्राह्मण के सुप्रसिद्ध भाष्यकार हरिस्वामी ने अपने भाष्य के प्रारम्भ में 'श्रीस्कन्दस्वाम्यस्ति मे गुरुः' लिखते हुए अपने गुरु के रूप में स्कन्दस्वामी का उल्लेख किया है। [1] हरिस्वामी के शतपथ ब्राह्मण पर भाष्य का रचना काल 638 ई. माना जाता है अतएव इनका भाष्य रचनाकाल 7वीं शताब्दी का प्रथम चरण माना जाता है। अपने भाष्य की भूमिका में स्कन्दस्वामी लिखते हैं कि मन्त्रों का अर्थबोध कराना ही भाष्य करने का प्रयोजन है-

"मन्त्राणामवबोद्धव्यो यतोऽर्थोऽङ्गत्वसिद्धये ।
ऋग्वेदस्यार्थबोधार्थमतो भाष्यं करिष्यते" ॥ [2]

इन्होंने मन्त्रों की यज्ञपरक व्याख्या की है। इन्होंने प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ में सूक्त के ऋषि तथा देवता आदि का उल्लेख किया है। इनका भाष्य सरल भाषा में है तथा व्याकरण सम्बन्धी उल्लेख भी संक्षिप्त रुप में दर्शनीय है।

2. नारायण (6ठी शताब्दी) –

इनका समय 6ठी शताब्दी के पश्चात् का माना जाता है। ऋग्वेद-भाष्य के अष्टम अष्टक के चतुर्थ अध्याय की भूमिका में वेंकटमाधव ने लिखा है कि-

"स्कन्दस्वामीनारायण उद्गीथ इति ते क्रमात् ।
चक्रुः सहैकमृग्भाष्यं पदवाक्यार्थगोचरम्" ॥ [3]

उक्त श्लोक के आधार पर नारायण को स्कन्दस्वामी का समकालिक माना जाता है। क्रमात् से ज्ञात होता है कि चतुर्थ अष्टक के बाद के अंशों पर इन्होंने भाष्य किया होगा। नारायण ने स्वतंत्र रूप से किसी भी प्रकार का भाष्य नही लिखा है तथा इनके नाम से कोई भाष्य प्रकाशित भी नही हुआ है।

3. उद्गीथ (6ठी शताब्दी) –

ऋग्भाष्य में उद्गीथ को स्कन्दस्वामी का सहायक कहा गया है। इन्हें कर्नाटक के वनवासी प्रदेश का निवासी माना जाता है। इनकी भाष्य शैली स्कन्दस्वामी के समान यज्ञपरक है। इन्होंने ऋग्वेद के अन्तिम भाग पर भाष्य लिखा है अर्थात् इनका भाष्य दशम मण्डल के पञ्चम से चौंतीसवें (34) सूक्त तक भ्रष्ट रूप में उपलब्ध है तथा स्कन्दस्वामी के भाष्यों में भी इनका योगदान रहा है।

सायण और आत्मानन्द ने अपने भाष्य में उद्गीथ का नामोल्लेख किया है। यदि सायण और उद्गीथ के भाष्य की तुलना की जाये तो ज्ञात होगा कि सायण ने उद्गीथ के भाष्य का सदुपयोग किया है। उद्गीथ ने भाष्य प्रारम्भ करते समय ऋषि और देवता का विवरण दिया है। उद्गीथ भाष्य में ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद प्रमाण रूप में उद्धृत किये गये है। इनके भाष्य में निरुक्त का प्रयोग भी है और साथ ही व्याकरणपरक विवेचन भी किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि वेद भाष्य कार्य में इनके द्वारा किया गया कार्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

4. माधवभट्ट (6ठी शताब्दी) –

इनका ऋग्वेद के प्रथम अष्टक पर भाष्य मद्रास विश्वविद्यालय से प्राप्त होता है। इन्होंने ऋग्वेद के विषय में 11 अनुक्रमणियाँ भी लिखी हैं जो कि शब्दकोश के रुप में थी। इनके भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थ और निरुक्त के वाक्य प्रमाण रूप में दृष्टिगत होते हैं। इनकी भाष्य शैली इनके उच्चकोटि के अर्थज्ञान को प्रदर्शित करती है।

5. माधव (7वीं शताब्दी) –
सामवेद का प्रथम भाष्यकार माधव को माना जाता है। इस भाष्य का नाम 'विवरण' है। इन्होंने पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक पर भाष्य लिखा है। आचार्य बलदेव उपाध्याय ने अनुमान किया है कि ये माधव बाणभट्ट के पूर्वज तथा गुरु थे क्योंकि कादम्बरी का मंगलश्लोक 'रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये' इत्यादि इनके भाष्य के मंगलश्लोक के रूप में भी है। [4]

6. वेंकटमाधव (1050-1150 ई.) –
प्राचीन भाष्यकारों में वेंकटमाधव का नाम अति प्रसिद्ध है। इनके पिता का नाम वेंकट तथा माता का नाम सुन्दरी था। वेंकटमाधव चोलराज्य के निवासी थे। इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद पर संक्षिप्त भाष्य लिखा है। इन्होंने पदों का अर्थ केवल मात्र अन्वय पर ध्यान रखते हुए किया है तथा स्वयं लिखा भी है कि- 'वर्जयन् शब्दविस्तारं शब्दैः कतिपयैरिति' ।[5] अतएव अर्थ में कोई विशेष दुराग्रह नहीं है। इन्होंने भाष्य भूमिका में देवता परक विचारों का उल्लेख करते हुए देवता का विभाजन तथा उनके नामों का भी उल्लेख किया है।
डॉ. लक्ष्मण स्वरूप ने इस भाष्य का समीक्षात्मक संस्करण तैयार किया है जो मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रथम अध्याय के अन्त में अपना पूरा परिचय देते हुए इन्होंने माता सुन्दरी, पिता वेंकटाचार्य और गोत्र कौशिक आदि का वर्णन किया है।

7. उवट (11वीं शताब्दी) –
उवट मूलतः कश्मीरी थे किन्तु जिविकावश अवन्ती क्षेत्र में जाकर बसे थे। शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता पर इनका भाष्य उपलब्ध होता है जो कि निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित है। उवट आनन्दपुर के निवासी वज्रट के पुत्र थे। अवन्ती में निवास करते हुए भोज के शासनकाल में इन्होंने यजुर्वेद पर भाष्य किया था। भोज का राज्यकाल 1018-1060 ई. तक है। अतः उवट का समय 11वीं शताब्दी माना गया है।

8. भट्टभास्कर (11वीं शताब्दी) –
इनका भाष्य कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर उच्चकोटि का भाष्य प्राप्त होता है। भट्टभास्कर कौशिक गोत्रीय शैव थे इनका पूरा नाम भट्टभास्कर मिश्र था। इनके भाष्य का नाम 'ज्ञानयज्ञ' था। इनके भाष्य में अनेक वैदिक ग्रन्थों और विविध आचार्यों के उद्धरण है। इनका निर्देश निघण्टु के भाष्यकार देवराज यज्वा ने तथा सायणाचार्य ने भी किया है।

9. हलायुध (12वीं शताब्दी) –
सायणाचार्य के पूर्ववर्ती वैदिक विद्वानों में हलायुध का विशिष्ट स्थान है। हलायुध बंगाल नरेश लक्ष्मणसेन के दरबार में धर्माधिकारी थे। हलायुध ने शुक्ल यजुर्वेद की काण्वसंहिता पर 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामक भाष्य लिखा है तथा अपने भाष्य के प्रारम्भ में अपने जीवन के विषय में परिचय दिया है। लक्ष्मणसेन 1170 ई. में राज्यसिंहासन पर आरुढ़ हुये थे तथा तीस वर्ष तक राज्य करते हुए 1200 ई. में इनका शासन समाप्त हुआ था। हलायुध लक्ष्मणसेन के समकालिक थे अतः इनका समय 12वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध कहा जा सकता है। भाष्य के अतिरिक्त धर्मशास्त्र सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों की भी रचना की है।

10. गुणविष्णु (12वीं शताब्दी) –
इन्होंने सामवेद की कौथुमशाखा पर 'छान्दोग्य मन्त्रभाष्य' लिखा था जिसका प्रचार बंगाल और मिथिला में बहुत अधिक है। कलकत्ता के संस्कृत-परिषद् से यह प्रकाशित है। मन्त्र व्याख्या में वैदिक ग्रन्थों के उद्धरण भी परिलक्षित होते है तथा व्याकरण विषयक चर्चा भी यत्र-तत्र प्राप्य है। सायण द्वारा रचित सामवेद-भाष्य का आधार गुणविष्णु का सामभाष्य माना जाता है।

11. आनन्दतीर्थ (13वीं शताब्दी) –
इनका निवास स्थान दक्षिण भारत का उडुपी नगर है। इनका दूसरा नाम मध्वाचार्य है। इनकी माता का नाम वेदवती था। इन्होंने सम्पूर्ण वेदविद्या अपने गुरु महात्मा अच्युततीर्थ से प्राप्त की। इन्हें वैष्णव सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। इन्होंने ऋग्वेद के कुछ 40 सूक्तों का पद्यात्मक भाष्य किया है। इनका ब्रह्मसूत्र पर उपलब्ध भाष्य अति प्रसिद्ध है। इनके भाष्य में जयतीर्थ की टीका तथा नरसिंह की विवृत्ति आदि भी प्रसिद्ध है।

12. भरतस्वामी (13वीं शताब्दी) –
भरतस्वामी दक्षिण के निवासी थे। इनके पिता का नाम नारायण और माता यज्ञदा थी। इन्होंने सामवेद और सामवेदीय ब्राह्मणों पर भी भाष्य लिखा था। इनकी भाष्य रचना होयसल के राजा रामनाथ के शासनकाल (1272-1310 ई.) में हुई थी। भरतस्वामी का सामवेद भाष्य संक्षिप्त है तथा इस भाष्य को तीन पर्वों में विभक्त किया है यथा- आग्नेयपर्व, ऐन्द्रपर्व तथा पवमानपर्व। वैदिक पदों को अनेक प्रकार से स्पष्ट किया गया है तथा पुष्टि के लिये पाणिनि को भी उद्धृत किया गया है। वेद भाष्य परम्परा में भरतस्वामी ने याज्ञिक व्याख्या पद्धति का प्रयोग करते हुए आध्यात्मिक व्याख्या को भी प्रस्तुत किया है।

13. सायण (14वीं शताब्दी) –
14वीं शताब्दी में व्याख्या के क्षेत्र में आचार्य सायण का आविर्भाव वैदिक अध्ययन-अध्यापन की सीमा के विस्तार में एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है। सायणाचार्य तुंगभद्रा नदी के दक्षिण तट पर स्थित विजयनगर के निवासी थे। काञ्ची के शिलालेख में इनका ब्राह्मण होना तथा भारद्वाज गोत्र का परिचय मिलता है। [6] इनके पिता मायण तथा माता का नाम श्रीमती था।
डॉ. ऑफ्रेख्ट के अनुसार सायण की मृत्यु 72 वर्ष की आयु में सन् 1387 में हुई ।[7] अत: सायणाचार्य का जन्म अनुमानत: सन् 1315 में हुआ होगा। सायणाचार्य ने अपने जीवन काल में कई राज्यों के मन्त्री का भार स्वीकार किया है जिसके अनुसार हम सायणाचार्य के समय को निश्चित कर सकते हैं।
सायण ने लगभग तीस वर्ष की अवस्था से लेकर अपने जीवन के अन्तिम वर्ष तक लगातार अटूट परिश्रम तथा अदम्य उत्साह से ग्रन्थों की रचना की थी। वेदों के गूढ़ परिचय से लेकर पुराणों के व्यापक पाण्डित्य तक, अलंकार सरणि के विवेचन से लेकर पाणिनि व्याकरण की आदरणीय अभिज्ञता तक, यज्ञ तन्त्र से लेकर वैदिक शास्त्र के व्यवहारिक ज्ञान तक सर्वत्र सायण का प्रकृष्ट पाण्डित्य स्मरणीय है। सायण द्वारा रचित 25 ग्रन्थों में से तैत्तिरीय संहिता, ऋग्वेद संहिता, सामवेद संहिता, काण्व संहिता, अथर्ववेद संहिता पर भाष्य उपलब्ध है।

14. आत्मानन्द (14वीं शताब्दी) –
इनका भाष्य अध्यात्म-परक है। इन्होंने ऋग्वेद के 'अस्य वामीय' सूक्त पर अपना भाष्य लिखा है। इन्होंने अपने भाष्य में अनेक ग्रन्थों (निरुक्त, बृहद्देवतादि) और भाष्यकारों (उद्गीथ तथा केशवाचार्य) का नामोल्लेख

किया है। इन्होंने स्वयं कहा है कि स्कन्दस्वामी आदि का भाष्य यज्ञपरक है तथा निरुक्त अधिदैवतपरक है किन्तु मेरा यह भाष्य अध्यात्म विषयक है और इस भाष्य का मूल विष्णुधर्मोत्तर है। [8] इनके भाष्य का उल्लेख सर्वप्रथम मैक्समूलर द्वारा रचित 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' नामक ग्रन्थ में मिलता है।

15. मुद्गल (14वीं शताब्दी) –
ऋग्वेदभाष्य परम्परा में मुद्गल का स्थान सायण के अनुसरणकर्त्ता के रूप में है। ऋग्वेद पर इनका आंशिक भाष्य ही है और इसके अतिरिक्त अन्य कोई लेखनकार्य नहीं है। इन्होंने व्याकरण, स्वरविवेचन और निर्वचनादि कार्यों को छोडकर सरल व्याख्या की है। भाष्य के प्रारम्भ में मुद्गल ने स्वयं के गोत्र का परिचय दिया है जिसके अनुसार मुद्गल मौद्गल्य गोत्र से है। [9]

16. धानुष्क यज्वा (1500 ई. के लगभग) –
इनकी प्रसिद्धी वेदत्रयी के भाष्यकार के रूप में है। इन्हें त्रिवेदी भाष्यकार कहा गया है। किन तीन वेदों पर इनका भाष्य है यह अज्ञात है। सम्प्रति इनका भाष्य उपलब्ध नहीं है। [10]

17. महीधर (16वीं शताब्दी) –
महीधर काशी के निवासी थे। इनका समय 16वीं शताब्दी है क्योंकि इनकी रचना 'मन्त्र-महोदधि' का समय 1588 ई. है। इनके भाष्य का नाम 'वेददीप' है। इन्होंने अपने भाष्य में मन्त्र तथा उवट भाष्य दोनों का ही स्पष्टीकरण किया है। उवट भाष्य को समझने के लिए इनका भाष्य सहायक है। इनका वैदिक भाष्य के साथ तन्त्र शास्त्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है।

18. अनन्ताचार्य (16वीं शताब्दी) –
काशी के वैदिक विद्वान् अनन्ताचार्य ने काण्वसंहिता के उत्तरार्ध (21-40) पर 'भावार्थदीपिका' नामक टीका लिखी है। इनके भाष्य पर महीधर भाष्य का स्पष्ट प्रभाव प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त इन्होंने यजुर्वेद प्रातिशाख्य भाष्य, शतपथब्राह्मण भाष्य और भाषिक सूत्रभाष्य भी लिखा है।

19. स्वामी दयानन्द (1824-1883 ई.) –
आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती (1824-1883 ई.) आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते है। वेद विषयक व्याख्या करने में इन्होंने नैरुक्त-प्रकिया का आश्रय लिया है। इन्होंने सम्पूर्ण शुक्ल यजुर्वेद की संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या की है। असामयिक निधन के कारण इनका वेद-व्याख्या का यह कार्य पूर्ण न हो पाया तथा ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के 80वें सूक्त तक ही इनके द्वारा की गयी व्याख्या उपलब्ध है। इन्होंने वेद में चार मुख्य विषय माने है- ज्ञान, विज्ञान, कर्म तथा उपासना। इन्होंने आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक रुप से वेद-व्याख्या की है।

20. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर (1867-1968 ई.) –
वेदमूर्ति श्री पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर आधुनिक युग के सायण कहे जाते है। [11] इन्होंने चारों वेदों, तैत्तिरीय संहिता, मैत्रायणी संहिता, काठक संहिता, दैवत संहिता आदि के विशुद्ध संस्करण निकाले हैं और चारों वेदों का हिन्दी में 'सुबोध भाष्य' भी प्रकाशित किया है। इन्होंने दयानन्द स्वामी का समर्थन किया है तथा साथ ही सायणाचार्य की विचारधाराओं का भी अनुसरण किया है। इनके ग्रन्थों की संख्या 100 से अधिक है जो कि हिन्दी, मराठी और गुजराती भाषाओं से प्रभावित है।

भाष्येतर परम्परा
वैदिक संहिताओं का भाष्य करने वाले विद्वानों में कई विद्वान् केवलमात्र अनुवादक और सम्पादक है। इनके द्वारा किया गया अनुवाद एवं सम्पादन कार्य प्रशंसा के योग्य है।

1. फ्रीड्रिश-रोजेन (Friedrich Rosen [12]) (1805-37 ई.) -
रोजेन (Rosen) प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक फ्रान्त्सबॉप के शिष्य और पाश्चात्त्य जगत् के प्रथम वैदिक विद्वान् थे। इन्होंने ऋग्वेदीय प्रथम मण्डल के 121 सूक्तों का लैटिन में अनुवाद किया था। [13]

2. यूजेन बर्नूफ (Eugene burnouf) (19वीं शताब्दी) –
फ्रांस में संस्कृत के प्राध्यापक युजेन बर्नूफ ने यूरोप में वेदाध्ययन की आधारशिला रखी थी। इनका व्याख्यान मुख्यतः ऋग्वेद पर रहा है। रुडाल्फ रॉथ और मैक्समूलर इनके शिष्यों में से हैं। इन्होंने सर्वप्रथम फ्रेंच भाषा में वेद का अनुवाद करने का प्रयत्न किया था। इन्होंने सन् 1826 ई. में लैसन के साथ 'पालि पर निबन्ध' तथा 'भारतीय बौद्ध-धर्म के इतिहास का परिचय' नामक दो ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

3. मैक्समूलर (Maxmuller) (1823-1900 ई.) –
यूरोपीय प्राच्यविद्याविदों में सर्वाधिक व्यापक विषयों पर काम करने वाले फ्रीडरिख मैक्समूलर (Friedrich max muller) भारत में भी पर्याप्त लोकप्रिय हुए। इन्होंने सायण भाष्य के साथ सम्पूर्ण ऋग्वेद का छः खण्डों में प्रकाशन किया था। पवित्र प्राच्य ग्रन्थमाला की भी रचना की है। भारत के प्रति इनकी श्रद्धा का परिचय इन्हीं की रचना 'India-what it can teach us' से ज्ञात होती है।

4. रुडाल्फ वॉन रॉथ (Rudolf Von Roth [14]) (1821-95 ई.) -
जर्मन विद्वान् रॉथ (Roth) मैक्समूलर (Maxmuller) के समान ही यूजेन बर्नूफ (Eugene burnouf) के शिष्य थे। इन्होंने वैदिक अर्थ की खोज मे आगमन-विधि तथा ऐतिहासिक-विधि का प्रवर्तन किया था। इन्होंने 'वेद का साहित्य तथा इतिहास' जर्मन भाषा में लिखकर वैदिक अनुशीलन प्रारम्भ किया था। इनकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति 'संस्कृत महाकोश' है। रॉथ तथा ह्विटनी ने 1846 ई. में प्रकाशित किया था। [15]

5. होरेस हेमन विल्सन (Horace hayman Wilson [16]) (1784-1860 ई.)-
विल्सन (Wilson) ने सर्वप्रथम सम्पूर्ण ऋग्वेद का अनुवाद सायण भाष्य के अनुसार अंग्रेजी गद्य में 1850 ई. में किया। [17] अनुवाद में यत्र-तत्र टिप्पणियाँ भी दी गई है। विल्सन सायण के प्रबल समर्थक थे।

6. ग्रासमान (Grassmann) [18] (1809-77 ई.) –
जर्मन देश के विद्वान् हर्मन ग्रासमान (Hermann Grassmann) संस्कृत तथा भाषाविज्ञान के विद्वान् थे। इनके द्वारा ऋग्वेद का जर्मन पद्यानुवाद दो भागों में किया गया है। इन्होंने ऋग्वेद से सम्बन्धित एक

'वैदिक कोष' (1873-75) तैयार किया जिसमें ऋग्वेदीय स्थलों का निर्देश करते हुए शब्दों के अर्थ लिखें हैं। [19]

7. लुडविग (Ludwig) (1837-1912 ई.) –
अल्फ्रेड लुडविग (Alfred ludwig) ने छह खण्डों में ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद तथा टीका प्रस्तुत की है। [20] प्रथम दो खण्डों में ऋग्वेद का जर्मन गद्यानुवाद है, तृतीय खण्ड में इस अनुवाद की भूमिका है, चतुर्थ-पंचम खण्डों में अनुवाद-भाग और मूल ऋचाओं पर टीका है। षष्ठ खण्ड में अनुक्रमणिकादि विषय है। लुडविग ने ऋत, सत्य, ब्रह्म और माया इत्यादि वैदिक शब्दों पर प्रकाश डाला है। [21]

8. राल्फ टी. एच. ग्रिफिथ (Ralph T. H. Griffith [22]) (1826-1906 ई.)-
ग्रिफिथ (Griffith) काशी के संस्कृत कालेज मे प्राचार्य थे। इन्होंने सायण भाष्य के पूरे उपयोग के साथ, उपयोगी सूचियों तथा टिप्पणियों का प्रयोग करते हुए ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया जो कि काशी से सन् 1889-92 ई. में प्रकाशित कराया गया। अतः इनका चारों वेदों पर अंग्रेजी पद्यानुवाद प्राप्त होता है तथा वाल्मीकीय रामायण पर भी पद्यानुवाद इनके द्वारा किया गया है। [23] इनका कार्य रॉथ और सायण से प्रभावित है।

9. हर्मन ओल्डनबर्ग (Hermann Oldenberg [24]) (1854-1920 ई.) –
जर्मन विद्वान् ओल्डनबर्ग ने ऋग्वेद की अति महत्त्वपूर्ण विवेचनायुक्त व्याख्या दो भागों में लिखी है जो सन् 1809-12 ई. में बर्लिन से प्रकाशित हुई है। इन्होंने 'ऋग्वेद का पाठालोचन तथा टिप्पणी' नामक ग्रन्थ जर्मन में लिखा है जिसमें ऋग्वेद के शब्द, व्याकरण और उच्चारण पर विस्तृत आलोचना है। इन्होंने ही मैक्समूलर द्वारा सम्पादित पवित्र प्राच्य ग्रन्थमाला के कई भागों का टिप्पणी सहित अनुवाद किया है।

10. गेल्डनर (Geldner [25]) (1852-1929 ई.) - कार्ल एफ. गेल्डनर (Karl F. Geldner) ने ऋग्वेद-संहिता का जर्मन अनुवाद किया था जो कि उनकी मृत्यु के पश्चात् हार्वर्ड ओरियन्टल सीरीज (Harvard Oriental series) से प्रकाशित हुआ । रिचर्ड पिशल (Richard pischel) के साथ मिलकर इन्होंने 'वैदिक अध्ययन' नामक ग्रन्थ तीन खण्डों में लिखा था।

11. अल्ब्रेख्ट वेबर (Albrecht weber) (1825-1901 ई.) - जर्मन देश के विद्वान् वेबर (Weber) के शिष्य लुडविग (Ludwig) रह चुके है। इन्होंने यजुर्वेद विषय पर शोधकार्य करके पीएच.डी. (Ph.D.) की उपाधि प्राप्त की है। इन्होंने शुक्ल यजुर्वेद का लैटिन भाषा में अनुवाद किया है। [26]

12. विलियम ड्री. ह्विटनी (William Dwight Whitney) (1827-94 ई.)
अमेरिका देश के निवासी ह्विटनी (Whitney) ने सम्पूर्ण अथर्ववेद का अनुवाद किया है। रॉथ के साथ मिलकर इन्होंने प्रथमतः अथर्ववेदीय शौनकीय शाखा का प्रकाशन किया था।

13. मौरिस ब्लूमफील्ड (Maurice Bloomfield) (1855-1928 ई.) –
अमेरिका देशवासी ब्लूमफील्ड (Bloomfield) ने बहुत से वैदिक ग्रन्थों का प्रकाशन, सम्पादन और प्रणयन किया था। इनके अधिकतर कार्य अथर्ववेद सम्बन्धित है। 1902 ई. में आपस्तम्बश्रौतसूत्र का सम्पादन व प्रकाशन करके 'बिब्लियोथिका इण्डिका' (Bibliothica Indica) नामक ग्रन्थ लिखा । इनका 'अथर्ववेद एण्ड गोपाथब्राह्मण' नामक गवेषणा परक ग्रन्थ है। इनके अतिरिक्त इन्होंने वैदिक कॉनकार्डेन्स (Vedic concordance) और ऋग्वैदिक रेपेटीशनस् (Rgvedic repetitions) जैसे ग्रन्थ भी लिखे थे।

14. ए. बी. कीथ (Arthur Berriedale Keith [27]) (1879-1944 ई.) –
डॉ. कीथ का जन्म ब्रिटेन में सन् 1879 ई. में हुआ था। इन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। संस्कृतज्ञ और आंग्ल भाषा के विद्वान् कीथ (keith) ने अनेको ग्रन्थों की रचना की है। इन्होंने कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता का आंग्ल अनुवाद किया है। इन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकिब्राह्मण, शांखायन आरण्यक, तैत्तिरीय और ऐतरेय आरण्यक का भी अंग्रेजी अनुवाद किया है। इनके द्वारा प्रणीत 'हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर' (History of Sanskrit Literature) नामक ग्रन्थ सुप्रसिद्ध है। इनके द्वारा धर्म और दर्शन पर "रिलीजन एण्ड फिलासफी आफ द वेदाज एण्ड उपनिषद्स" नामक ग्रन्थ दो भागों में लिखा है जो हार्वर्ड से प्रकाशित है।

15. योगिराज अरविन्द (1872-1950 ई.) –
अरविन्द अपने युग के अनुपम साधक, विद्वान् तथा ऋषि थे। इनकी दृष्टि रहस्यवादी है। ये वेदों में अध्यात्मविद्या के गूढ़ रहस्यों की उपस्थिति मानते है। वेदों पर इनकी पुस्तक 'वेद-रहस्य' बहुचर्चित है जो कि "On The Vedas" का हिन्दी अनुवाद है।

16. कपाली शास्त्री (1886-1953 ई.) –
शास्त्री जी योगिराज अरविन्द के शिष्य थे। इन्होंने ऋग्वेदभाष्य के अतिरिक्त आंग्ल भाषा में भी कई ग्रन्थ लिखे है।

17. स्वामी विद्यानन्द (1899-1978 ई.) –
वेद व्याख्याकार के रुप में प्रसिद्ध विद्यानन्द जी वेदप्रचारक और प्रौढ़लेखक है। इनकी व्याख्या पद्धति अध्यात्म-परक थी। इन्होंने वैदिक मन्त्रों की व्याख्या की है। वेदालोक, जीवन संविधान, विदेहवाणी और वैदिक योगपद्धति आदि ग्रन्थ लिखे है।

18. प. हरिशरण सिद्धान्तालङ्कार (1901-1991 ई.) –
इनके द्वारा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य किया गया है। इन्होंने अपने भाष्य में महर्षि दयानन्द के भाष्य का अनुसरण किया है।

19. लुई रेनु (Louis Renou [28]) (1896-1966 ई.) –
प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान् लुई रेनु (Louis Renou) ने वर्तमान शताब्दी के पूर्वार्ध में वेद विषयक कई ग्रन्थों की रचना की है। इनके कार्य फ्रेंच भाषा में है। इनका प्रथम मुख्य कार्य 'वेद-विषयक साहित्य सामग्री' है।
वेदभाष्य-परम्परा में और भी कई उत्कृष्ट विद्वान् हुए हैं जिन्होंने वेद भाष्य परम्परा में अपना योगदान दिया है। यथा- पं. शिवशंकर शर्मा, आर्यमुनि, जयदेव विद्यालंकार, क्षेमकरण दास, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, रामनाथ वेदालंकार, कालनाथ, कुण्डिन, भवस्वामी, आचार्यक्षुर, शत्रुघ्न, नीलकण्ठ, जयस्वामी, द्विजराजभट्ट, स्वामि करपात्र आदि है।
इसी प्रकार पाश्चात्त्य जगत् में भी बहुत दीर्घ-परम्परा चलती रही जिनमें से कुछ के केवलमात्र नाम और कार्य ही ज्ञात है। यथा- जी.

स्टीवेन्सन, ई. ए. रोएर, एस. ए. लांगलोइस, थियोडोर आउफ्रेख्ट, थियोडोर बेनफे, जुलियस एगलिंग, एल. वी. श्रोडर, डब्लू. कैलेण्ड, ए. सी. बर्नेल, एल. शेरमन और जे. ग्रिल आदि है। इस प्रकार वेदाध्ययन की परम्परा अनवरत रूप से अद्यावधि चल रही है। प्रस्तुत पाश्चात्त्य विद्वानों में से कुछ विद्वानों ने वेदों का भाष्य नहीं किया है अपितु किसी प्रसिद्ध वेद भाग का अनुवाद प्रस्तुत किया है। इन वेद भाग के भाष्यों से हमें वेदार्थानुशीलन में सहायता प्राप्त होती है तथा एक नया प्रेरणा स्रोत प्राप्त है। अतः इनका भी महत्व सर्वगणनीय है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण विश्व साहित्य में प्रसिद्ध प्राचीनतम ग्रन्थ 'वेद' के ज्ञान का प्रस्तुतीकरण करने में भारतीय भाष्यकारों की अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। वेदार्थ ज्ञान सम्पूर्ण समाज के लिये कल्याणकारी है। भाष्यकारों ने वेदार्थ ज्ञान की सुरक्षा के लिये जो भाष्य सम्बन्धी कार्य किये है वह अत्यन्त उपयोगी है। वैदिक ग्रन्थों के अर्थ तथा भावार्थ को जानने के लिये केवल मात्र मूल ग्रन्थ ही सहायक नही हो सकते थे तथा इन मूल ग्रन्थों के व्याख्या अथवा भाष्य ग्रन्थ जनमानस की प्रबल इच्छा थी। भाष्यकारों ने अपने परिश्रम तथा कौशल से इन मूल ग्रन्थों को समझाने के लिये भाष्य कार्य प्रारम्भ किया।

भारतीय विद्वानों के साथ पाश्चात्त्य जगत् के विद्वानों ने भी सम्भवतः प्रयास किया परन्तु उनका यह प्रयास अनुवाद कार्य तक ही सीमित रहा। वेदार्थ ज्ञान को समझने के लिये जो दृष्टि भारतीय विद्वानों की रही वह पाश्चात्त्य विद्वानों के पास न थी। भाष्यकारों द्वारा किये गये इस सफल प्रयास से वर्तमान समय में हम सभी वैदिक कालीन सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित है। अंततः कहा जा सकता है कि भाष्य परम्परा के अन्तर्गत विद्वानों द्वारा किया जाता हुआ यह कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है।

संदर्भ सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृ. 111
2. ऋ. स्कन्द. भा. 1.1.1
3. ऋ. पर वेंकटमाधवभाष्य के आरम्भ में ।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृ. 112
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृ. 111
6. "भारद्वाजकुलेश सायण! गुणैस्त्वत्तस्त्वमेवाधिकः"। वेदभाष्यभूमिकासंग्रह, आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृ. 21
7. Catalogus Catalogorum, P. 711.
8. वैदिक साहित्य का इतिहास, डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 1983
9. मौद्गल्यगोत्रेण च मुद्गलेन ह्यात्मानुभूतेन सुसंस्कृतेन । यथार्थभूतेन सुसाधकेन समुद्धृतं सारमिदं वरिष्ठम् ॥
10. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, डॉ. कपिल देव द्विवेदी, पृ. 23
11. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, डॉ. कपिल देव द्विवेदी, पृ. 19
12. https://en.wikipedia.org/wiki/Friedrich_August_Rosen
13. http://www.cs.mcgill.ca/~rwest/link-suggestion/wpcd_2008-09_augmented/wp/r/Rigveda.htm
14. https://en.wikipedia.org/wiki/Rudolf_von_Roth
15. वेदव्याख्या पद्धतयः, शशि तिवारी, पृ. 207
16. http://en.banglapedia.org/index.php?title=Wilson,_Horace_Hayman
17. https://en.wikipedia.org/wiki/Horace_Hayman_Wilson
18. https://en.wikipedia.org/wiki/Hermann_Grassmann
19. http://www-groups.dcs.st-and.ac.uk/history/Biographies/Grassmann.html
20. http://crossasia-repository.ub.uni-heidelberg.de/3206/1/Berger_German%20Translators.pdf
21. https://en.wikipedia.org/wiki/Rigveda
22. https://en.wikipedia.org/wiki/Ralph_T._H._Griffith
23. http://www.sacred-texts.com/hin/rigveda/
24. https://en.wikipedia.org/wiki/Hermann_Oldenberg
25. https://en.wikipedia.org/wiki/Karl_Friedrich_Geldner
26. http://theosophy.wiki/w-en/index.php?title=Albrecht_Weber
27. https://en.wikipedia.org/wiki/Arthur_Berriedale_Keith
28. https://en.wikipedia.org/wiki/Louis_Renou